वैश्वीकरण : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैश्विक संस्कृतियों का नवीनीकरण

डॉ. प्रगति दूबे
असिस्टेंट प्रोफेसर
समाजशास्त्र विभाग
गया प्रसाद स्मारक राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
अम्बारी, आजमगढ़, उ.प्र.।

सारांश-

एक सिद्धांत के रूप में, वैश्वीकरण एक भूमंडली सासंस्कृतिक व्यवस्था के उद्भव की विवेचना है। वैश्वीकरण के अनुसार भूमंडली संस्कृति अनेक विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक विधाओं का परिणाम है। वैश्वीकरण की जनसंचार क्रांति ने एक नये आन्दोलन को जन्म दिया जिसने जीवन के सभी पहलू को चाहे वह आर्थिक हो या सांस्कृतिक, सामाजिक हो या राजनैतिक को प्रभावित किया है। संस्कृति जो प्राचीनता की परिचायक है उसके भी नवीनीकरण के लिये वैश्वीकरण ने नये नजरिए या यूं कहे की देखने की पद्धति प्रदान किया है। वैश्वीकरण दुनिया के सभी देशों के वैश्विक अर्थव्यवस्था से जोड़ता है इसके परिणाम स्वरूप पूँजी, उत्पाद तथा सूचनायें इन सभी का स्वतंत्र रूप से दुनिया भर में पहुंचना आरम्भ हो जाता है। इससे केवल अर्थव्यवस्था पर ही प्रभाव नहीं पड़ता बल्कि विश्व स्तर पर राजनैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा पर्यावरणीय क्षेत्र भी प्रभावित होते हैं। वैश्वीकरण से तात्पर्य केवल स्थानीय संस्कृति को वैश्विक संस्कृति से जोड़ना मात्र नहीं है अपितु स्थानीय संस्कृति की स्थानीयता को मूल रूप से बनाये रखना है। वैश्वीकरण का प्रमुख आधार विभिन्न देशों की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक अंतनिर्भरता को माना जाता है।

बीज शब्द- जनसंचार क्रांति, भूमंडली संस्कृति, नवीनीकरण

प्रस्तावना-

वैश्वीकरण उस वृहद प्रक्रिया का नाम है जिसके द्वारा सम्पूर्ण विश्व के देशों या समाजों के सामाजिक सम्बन्धों एवं उसकी अंतनिर्भरता को गहराई से समझने में एक नई पहचान कायम की जा सके। वैश्वीकरण की इस प्रक्रिया को प्रारम्भ तो किया विविध देशों में खोले गये सुपर मार्केटों ने, जहाँ पर दुनिया भर के कई देशों में चलने वाले सामानों (उत्पादों) की बिक्री इसलिए होने लगी कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा ने एक जोर पकड़ा तथा गुणात्मक उत्पादों के लाने में एक से एक वस्तुएँ सामने लाई गईं जिसे ग्राहकों-उपभोक्ताओं ने पसन्द किया। नये से नये उत्पाद आने लगे हैं जो कुछ वर्षों पूर्व अस्तित्व में ही नहीं थे। इस वैश्वीकरण ने संसार को देखने का तरीका बदल दिया, तथा साथ ही वैश्विक स्तर पर विविध संस्कृतियों को समझने का मौका भी दिया। वैश्वीकरण एक परिप्रेक्ष्य या नजरिया देता है कि हम दुनिया के अन्य समाजों के साथ कैसे सम्बन्ध एवं क्रिया रखें। विश्व के किसी भी क्षेत्र की समस्याएँ हमारे जीवन को प्रभावित कर सकती हैं।

गत कुछ दशकों में यह देखा गया है कि सूचना तकनीकी के विस्तार ने सम्पूर्ण विश्व के लोगों के बीच संपर्क की नई-नई संभावनाओं को उपलब्ध कराया है। इस प्रकार के सूचना प्रवाह का परिणाम यह

होने लगा है कि लोग अब अपने आप को देश-विदेश के अन्य लोगों के साथ जुड़े हुए अधिक पाते हैं। लोग विश्व के मुद्दों एवं प्रक्रियाओं में अब रुचि दिखाने लगे हैं। टीoवीo, रेडियो एवं दैनिक प्रेस वाले भी उनकी राय जानने हेतु तरह-तरह के प्रश्न प्रसारित करते हैं तथा उनके विचारों को जनता तक पहुँचाते हैं।

सूचना-प्रवाह में तेजी की यह अप्रत्याशित वृद्धि वैश्वीकरण में विश्व के लोगों को एक साथ जोड़ने में सफल हुई है। सूचना प्रचार की तेजी से लोगों के दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाले कारक भी बदल दिये हैं।

भूमंडलीकरण का सामाजिक आशय बहुत महत्वपूर्ण है। समाज के विभिन्न हिस्सों पर इसका प्रभाव बहुत ही भिन्न प्रकार का होता है। इसलिए भूमण्डलीकरण के प्रभाव के बारे में लोगों के विचार एक समान न होकर, बहुत ही विभाजित हैं। कुछ का विश्वास है कि भूमण्डलीकरण बेहतर विश्व के अग्रदूत के रूप में अत्यंत आवश्यक है। दूसरों को डर है कि अधिक सुविधा सम्पन्न वर्गों में बहुत से लोगों को तो वैश्वीकरण से लाभ होगा लेकिन पहले से ही सुविधा-वंचित आबादी के बहुत बड़े हिस्से ही हालत बद से बदतर होती चली जाएगी। परन्तु अन्त में हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि भूमण्डलीकरण का अर्थ समूचे विश्व में सामाजिक एवं आर्थिक संबंधों के विस्तार के कारण विश्व में विभिन्न लोगों, क्षेत्रों एवं देशों के मध्य अंतः निर्भरता की वृद्धि से है।

भूमण्डलीकरण संस्कृति को कई प्रकार से प्रभावित करता है। युगों से भारत सांस्कृतिक प्रभावों के प्रति खुला दृष्टिकोण अपनाए हुए है और इसी के फलस्वरूप वह सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध होता रहा है। पिछले दशकों में कई बड़े-बड़े सांस्कृतिक परिवर्तन हुए हैं जिनसे यह डर पैदा हो गया है कि कहीं हमारी स्थानीय संस्कृतियाँ पीछे न रह जाएँ। हमने पहले देखा था कि हमारी सांस्कृतिक परम्परा कूपमंडूक यानी जीवनभर कुएँ के भीतर रहने वाले उस मेढक की स्थिति से सावधान रहने की शिक्षा देती है जो कुएँ से बाहर की दुनिया के बारे में कुछ नहीं जानता और हर बाहरी वस्तु के प्रति शंकालु बना रहता है।

सौभाग्य से हम आज भी अपनी परम्परागत खुली अभिवृत्ति अपनाए हुए हैं। इसलिए, हमारे समाज में राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों पर ही नहीं बल्कि कपड़ों, शैलियों, संगीत, फिल्म, भाषा, हाव-भाव आदि के बारे में गरमागरम बहस होती है। इस प्रवृत्ति की ओर अधिक प्रोत्साहित किया वैश्वीकरण ने, जिसने विश्व पटल पर यह विश्वास दिलाया कि विविध संस्कृतियों में कुछ नवीनता है जिससे हमें परिचित होना चाहिए तथा सहृदयता से उसका स्वागत करना चाहिए एवं उसमें बदलाव के लिए सदैव तैयार एवं उत्सुक रहना चाहिए।

कुछ विद्वानों का मत है कि संस्कृति के भूस्थानीकरण की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। भूस्थानीकरण का अर्थ है भूमण्डलीय के साथ-साथ स्थानीय का मिश्रण। यह एक ऐसी रणनीति है जो अक्सर विदेशी फर्मों द्वारा अपना बाजार बढ़ाने के लिए स्थानीय परंपराओं के साथ व्यवहार में लाई जाती है। भारत में, हम यह देखते हैं कि स्टार, एम.टी.वी. चैनल वी, और कार्टून नेटवर्क जैसे सभी विदेशी टेलीविजन चैनल भारतीय भाषाओं का प्रयोग करते हैं।

यहाँ तक कि मैक्डॉनाल्डस भी भारत में अपने निरामिष और चिकन उत्पाद ही बेचता है, गोमांस के उत्पाद नहीं, जो विदेशों में बहुत लोकप्रिय हैं। नवरात्रि पर्व पर तो मैक्डॉनाल्डस विशुद्ध निरामिष हो जाता है। यह इस तथ्य की ओर प्रकाश डालता है कि संस्कृति की नवीनता के सन्दर्भ में भी स्थानीय परमपराओं का ध्यान रखा जाता है। वैश्वीकरण हमारे स्थानीय दिन-प्रतिदिन के जीवन को प्रभावित करता है। यह भी समझना चाहिए कि जहाँ वैश्वीकरण लोगों को एक-दूसरे के निकट लाता है, वहीं उनमें तनाव भी पैदा करते

हैं। स्थानीय संस्कृति और बाजार को वैश्विक संस्कृति और बाजार का भय सदैव बना रहता है। ऐसा लगता है कि वैश्विक संगीत कहीं हमारे स्थानीय संगीत- भोजपुरी नाच गाने, गुजराती गरवे और महाराष्ट्र के तमासों- को न गटक जाये।

थियोडोर लेविट ने एक जगह कहा है कि - "हमें वैश्विक तरीके से सोचना चाहिए और हमारे काम करने के तरीके स्थानीय यानि देशी होने चाहिए।" लेविट का यह कथन वैश्विक और स्थानीय में तनाव कम करके सामंजस्य स्थापित करता है। वैश्वीकरण का सिद्धांत वैश्विक सांस्कृतिक व्यवस्था की पड़ताल करता है।

यदि हम वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैश्विक संस्कृतियों के नवीनीकरण की चर्चा कर रहे हैं तो यह कैसे सम्भव है कि हम कनाडा के लेखक मार्शल मैक्लूहान के "विश्व गाँव" की चर्चा न करें। उनका प्रबन्ध है कि इलेक्टॉनिक संचार ने सम्पूर्ण संसार को एक सूत्र में बाँध दिया है। इस तरह से दुनिया भर के लोग टेलीविजन द्वारा प्रसारित खबरों और घटनाक्रम को साथ-साथ देखते हैं। जैसे- किसी गाँव के लोग हर निवासी, पड़ोसी और नातेदार को व्यक्तिगत रूप से जानते हैं, किसी से कोई दूराव नहीं है, वैसे ही दुनिया भर के लोग एक-दूसरे को जानते हैं। मैक्लूहान का कहना है कि मीडिया ने सम्पूर्ण दुनिया को एक छोटा सा गाँव बना दिया है।

मैक्लूहान ने यह प्रबन्ध रखा था कि संस्कृति एक स्थान से दूसरे स्थान पर और सभी स्थानों पर विकसित होती है। इस विवरण में संचार तथा तकनीकी यंत्र की भूमिका बहुत भारी होती है। इस तंत्र ने समय और स्थान के बंधन को उखाड़ फेंका है। अब सारे संसार के लोग एक-दूसरे के साथ संवाद में जुट गये हैं।

वैश्वीकरण के बुलबुले की चर्चा करना आज के समय में एक सामान्य बात है। कहिये यह एक फैशन है। कोई भी बात अधूरी है जब तक वैश्वीकरण के पद का प्रयोग नहीं होता। *केवीन रोबिन्स* ने अपने एक निबन्ध में वैश्वीय संस्कृति की चर्चा बड़े विस्तार से की है। उनका कहना है कि पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का बहुत बड़ा प्रभाव संस्कृति पर पड़ा है। जब आर्थिक गतिविधियों का वैश्वीकरण हो रहा है, तो सांस्कृतिक रूपान्तरण का भी नया दौर आ रहा है। अब संसार भर में सार्वभौमिक सांस्कृतिक उत्पाद पैदा हो रहे हैं। मतलब कि, संस्कृति का वस्तुओं की तरह उत्पादन हो रहा है।

इस सम्बन्ध में (Saathchi and Saathchi) ने एक नये पद को गढ़ा है। वे कहते हैं कि आज के वैश्वीकरण के युग में संस्कृति का मिलन हुआ है। अर्थ स्पष्ट है, अब दुनियाभर के लोगों की जीवन-पद्धति (Life Style) एक जैसी हो गयी है। सभी लोग राष्ट्र-राज्यों की सीमाओं को लाँघकर एक जैसी संस्कृति को अपनाने लगे हैं। उपभोग की वस्तुएँ समान हैं - पीजा, टूथपेस्ट, टीन में बंद खाद्य पदार्थ और भाँति-भाँति के जेल पेन। वास्तव में वैश्वीकरण ने एक ऐसी साझा संस्कृति (Shared Culture) को पैदा किया है जो विश्वव्यापी है। आज संस्कृति को पैदा करने वाले नये सौदागर हैं। वे चाहते हैं कि संस्कृति का विस्तार इस भांति से हो कि देश और राज्यों की सभी सीमाएँ इसके सामने समाप्त हो जायें।

"अमेरिका केवल न्यूज नेटवर्क (CNN) ने एक स्थान पर यह विज्ञापित किया है कि, आज की संस्कृति इलेक्ट्रोनिक संस्कृति है। वह सिगनल्स (Signals) पर सवार होकर आती है और सबको चकाचौंध कर देती है।

अतः यह स्पष्टतः कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण के इस दौर में विविध देशों की संस्कृतियाँ नवीनीकरण के दौर में हैं। वे जहाँ अपने परम्परागत स्वरूप को संजोने में जुटी हुयी हैं, वहीं वे नवीनीकरण की प्रक्रिया से प्रभावित होने लगी हैं। यदि ये दौर

चकाचौंध भरा है। तो वहीं पर यह हमें गहरे कुँए की तरफ भी ले जाता है, जहाँ हमारी पुरानी स्थानीय संस्कृति का अस्तित्व एक नये दौर से गुजर रहा है।

वैश्वीकरण के प्रभाव को आज पहनावे, उपभोग प्रतिमान, खान-पान की आदतों आदि की एकरूपता में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। लोग, विशेष तौर पर युवा, नई जीवन शैली को पागलों की तरह अपना रहे हैं, जन संचार माध्यमों ने दुनिया की उन संस्कृतियों के निकट ला दिया है, जो सुदूर स्थानों पर रहने वाले लोगों के लिए अनजान थी। भूगोल, पर्यटन और वन्य जीवों से जुड़े टेलीविजन चैनलों ने दुनिया के लोगों को, उनकी विशिष्टताओं की उपेक्षा करते हुए, सांस्कृतिक रूप से एकीकृत करने में बहुत अधिक योगदान दिया है।

प्रो० योगेन्द्र सिंह का कहना है कि वैश्वीकरण ने सांस्कृतिक अभिव्यक्ति, भाषाओं के इस्तेमाल तथा स्थानीय, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तरों पर संचार माध्यमों के परम्परागत तरीकों को बदला है। इसने नगरीय क्षेत्रों में पूरी तरह से नए तरीके की बहुत सी उप-संस्कृतियों का निर्माण किया है। ग्रामीण और नगरीय, दोनों ही केन्द्रों से जुड़ी लोकप्रिय संस्कृति का उद्भव एक नवीन घटना है।

वहीं दूसरे स्तर पर, वैश्वीकरण की प्रक्रिया के अन्तर्गत होने वाला सांस्कृतिक रूपान्तरण स्थानीय संस्कृति के लिए भौतिक लाभ भी उपलब्ध कराता है। भारत की स्थानीय संस्कृतियाँ जैसे उड़ीसा का पीपली का काम, राजस्थान के कसीदाकारी वाले वस्त्र, कर्नाटक का हाथी दाँत का काम तथा अन्य दूसरी लोक संस्कृतियों जैसे लोक कला, लोक गीत तथा लोकनृत्य, पहले स्थानीय जगहों तक ही सीमित थे, वैश्वीकरण के द्वारा आज इनका विस्तार इनकी परम्परागत सीमाओं से बहुत दूर तक हो गया है। ये नवीनीकरण ही तो है कि विविध स्थानीय संस्कृतियों का वस्तुकरण और मौद्रीकरण हो रहा है। ये संस्कृतियाँ वैश्विक स्तर पर अपने बाजार मूल्य के अस्तित्व का आनन्द ले रही हैं।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया के अन्तर्गत, सूचना प्रौद्योगिकी में हुई क्रान्तिकारी प्रगति के कारण आज समय और स्थान सिमट गए हैं। लोगों, विशेषकर युवाओं की जीवनशैली में गम्भीर परिवर्तन हुए हैं। लोगों के बीच एक स्वाभाविक भय रहा है कि वैश्वीकरण सांस्कृतिक सजातीयकरण, राज्य विहीनता तथा राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और स्थानीय पहचान का संकट पैदा करेगा। लेकन यह भय जल्दी ही निराधार सिद्ध हो गया, क्योंकि जीवनशैली, पहनावा, खान-पान, काम और अवकाश में गम्भीर परिवर्तन के बावजूद स्थानीय पहचान पूरी तरह से विस्मृत नहीं हुई, बल्कि यह कई रूपों में और भी मजबूत हुई है।

आज वैश्विक और स्थानीय दोनों संस्कृतियों के सह-अस्तित्व का तथ्य उभरकर सामने आ रही है। वैश्वीकरण की इस प्रक्रिया ने स्थानीय संस्कृति को प्रतिस्थापित करने के बजाय इसके साथ अनुकूल स्थापित किया है। परन्तु ये संस्कृति नवीनता को ग्रहण किये हुए हैं, इस प्रकार से विकसित हुई संस्कृति, एक ऐसी संस्कृति है, जिसमें विदेशी और देशी, दोनों ही संस्कृतियों के तत्व शामिल होते हैं। यद्यपि इस नवीनीकरण के सन्दर्भ में कई विद्वानों ने अपने नकारात्मक विचारों को व्यक्त किया है, उनका मानना है कि विशेषतः भारतीय सन्दर्भ में सांस्कृतिक वैश्वीकरण के खिलाफ आर्थिक वैश्वीकरण की तुलना में बड़ा हल्ला हो रहा है।

संकट यह है कि यदि इसी रफ्तार से वैश्विक संस्कृति ने यहाँ अपना पैर फैलाया तो हमारी पहचान समाप्त हो जायेगी। वस्तुतः यह संकट पहचान (Identity) का है। पोप संगीत के सामने हमारे शास्त्रीय संगीत का क्या होगा ? वेस्टर्न डान्स की तुलना में हमारे भरत नाट्यम और ओडिसी नृत्य जिसकी वर्षों से साधना होती है, कहाँ खड़े होंगे, आज प्रेमचन्द्र और

फणीश्वरनाथ रेणु को कौन पढ़ता है, उनका विचार है कि छत्तीसगढ़ की पंडवानी, विन्ध्य प्रदेश का आल्हा, महाराष्ट्र का तमाशा, उत्तर-प्रदेश और बिहार की नौटंकी और पंजाब का गिद्दा समाप्ति की छोर पर है। ऐसा लगता है कि यदि सांस्कृतिक वैश्वीकरण इसी तरह अपना पैर फैलाता रहा तो हमारी सांस्कृतिक विरासत देखते-देखते हमारे हाथों से किसी साबुन की तरह फिसल जायेगी और हम रीते हाथ रह जायेंगे।

परन्तु यदि एक छोर से इस तथ्य पर विचार करें तो यह देखा जा सकता है कि भूमण्डलीकरण के युग में स्थानीय संस्कृति का महत्व बढ़ा है और वैश्विक संस्कृतियों में अन्तः सम्बन्ध बढ़ा है। हमारी संस्कृति में भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया में अपनी अस्मिता तथा अस्तित्व को नया रूप दिया है। योगेन्द्र सिंह ने ठीक ही लिखा है कि भारतीय सांस्कृतिक अस्मिता भूमण्डीकरण के कारण समाप्त नहीं होगी बल्कि इसमें ज्यादा सशक्तिकरण होगा, जिसे स्थानीय स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक देखा जा सकता है।

निष्कर्ष-

अन्ततः विविध तथ्यों, विचारों एवं विचारकों के दृष्टिकोण को समझने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने वैश्विक स्तर पर सारी सीमाओं को तोड़कर एक सूत्र में सारी संस्कृतियों को पिरो दिया है, जिसके कारण स्थानीय संस्कृतियाँ एक नवीन रूप में विश्व पटल पर दिखायी दे रही हैं, जिससे न केवल उनका नवीनीकरण हो रहा है बल्कि उनकी पहचान भी वैश्विक स्तर पर कायम हो रही है। जिसमें वैश्वीकरण की भागीदारी अतुलनीय और अविस्मरणीय है।

सन्दर्भ-सूची-

1. शर्मा सी. एल. (2008) "समकालीन समाजशास्त्रीय परिदृश्य" राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी प्लाट नं. 1, झालाना सांस्थानिक क्षेत्र जयपुर,
2. रावत, हरिकृष्ण (2007) "उच्चतर समाजशास्त्र विश्वकोष" रावत पब्लिकेशन, जयपुर एवं नई दिल्ली,
3. दोषी, एस.एल. (2003) "आधुनिकता, उत्तर-आधुनिकता एवं नव-समाजशास्त्रीय सिद्धांत" रावत पब्लिकेशन, सत्यम, अपार्टमेन्ट, जैन मन्दिर रोड, सेक्टर 3, जवाहर नगर, जयपुर,
4. सिंह, शिवबहाल (2010) "विकास का समाजशास्त्र" रावत पब्लिकेशन, सेक्टर 3, जवाहर नगर, जयपुर,
5. कुमार, अमर (2005) "योगेन्द्र सिंह का समाजशास्त्र" रावत पब्लिकेशन, जवाहर नगर, जयपुर,
6. अनवर एम.सिराज, उत्पल श्वेहा, गांगुली गौतम, चिकार अरुण, लाल एम., कुमार सुनीर (2007) "भारत में सामाजिक परिवर्तन एवं विकास" राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद

***